महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi VishwaVidyalaya, Wardha

(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

-::- प्रेस विज्ञप्ति -::-

भाषा के गायब होने से गायब होती है सभ्यता एवं संस्कृति- प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

प्रयागराज, दिनांक 22 फरवरी 2021

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज, झूंसी के अकादमिक निदेशक आचार्य अखिलेश कुमार दुबे के संयोजन में 21 फरवरी, 2021 को ऑनलाइन माध्यम से अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम मातृभाषा

का महत्त्व विषय पर केंद्रित था। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलगीत से की गई। स्वागत वक्तव्य सह-आचार्या डॉ. अवंतिका शुक्ला ने दिया। डॉ. विजया सिंह ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। मातृभाषा का महत्त्व विषय पर परिचर्चा करते हुए केंद्र के अध्यापकों ने मातृभाषा से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपना वक्तव्य दिया। जिसमें हिंदी विभाग के आचार्य के. के. सिंह ने मातृभाषा से जुड़े विविध पक्षों पर चर्चा की एवं व्यक्तिगत स्तर पर मातृभाषा का प्रयोग करने एवं मातृभाषा के प्रति संवेदनशील होने की बात कही। जनसंचार विभाग के आचार्य कृपाशंकर चौबे ने मातृभाषा के प्रयोग एवं हिंदी भाषा के प्रयोग की शुद्धता पर ध्यान देने की बात कही। क्षेत्रीय केंद्र की सह-आचार्या डॉ. अवंतिका शुक्ला ने मातृभाषा से जुड़े सामाजिक सरोकारों पर चर्चा की। सह-आचार्या डॉ. आशा मिश्रा ने मातृभाषा के प्रति व्यक्ति की निजी संवेदनशीलता एवं सामाजिक-सांस्कृतिक बिंदुओं को स्पष्ट किया। सहायक-आचार्या डॉ. हरप्रीत कौर ने पंजाबी मातृभाषा एवं साहित्य पर चर्चा की। सहायक-आचार्या डॉ. विजया सिंह ने मातृभाषा मगही: बाजार और भाषा पर चर्चा की। डॉ. ऋचा द्विवेदी ने मातृभाषा के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए डेनमार्क के कवि ऑर्थर कुदनर की कविता का पाठ किया। डॉ.

क्षेत्रीय केंद्र

भूखंड संख्या-6 /I -3 झूंसी योजना संख्या -3,प्रयागराज -211019 उ. प्र., भारत

फोन : 0532 - 2567442, ईमेल: mgahvalld@gmail.com, वेबसाइट : www. hindivishwa.org

प्रभात सिंह ने मातृभाषा के लिए किए गए विविध राजनेताओं के कार्यों पर चर्चा की। शिवाजी जोगदंड ने मातृभाषा मराठी के विकास एवं इतिहास के

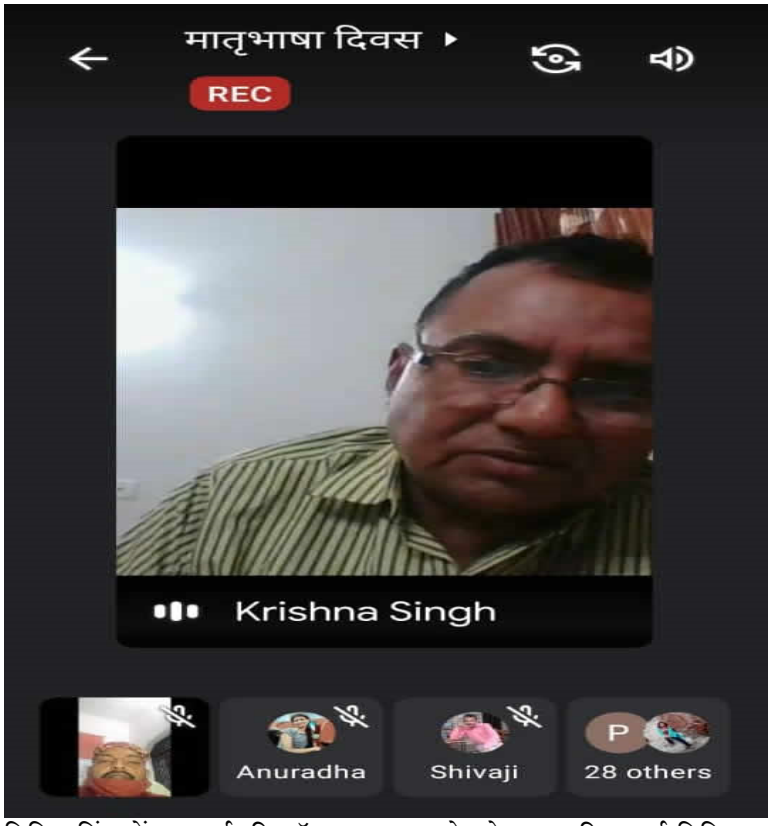

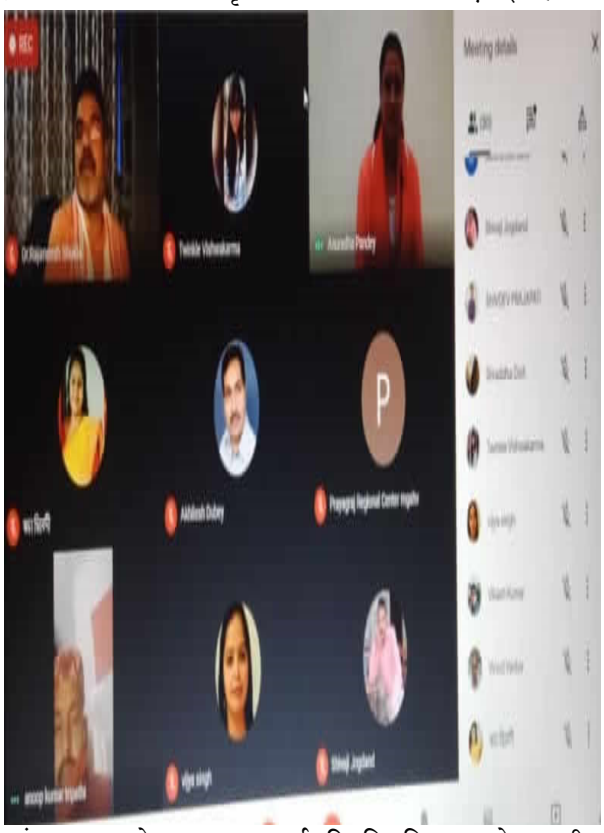

विविध बिंदुओं पर चर्चा की। डॉ. अनुराधा पाण्डेय ने भारत की भाषाई विविधता एवं मातृभाषा के महत्त्व पर चर्चा की। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य रजनीश कुमार शुक्ल ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए मातृभाषा के महत्त्व पर चर्चा की एवं वैश्विक स्तर पर मातृभाषा को समझने, सभी मातृभाषाओं का सम्मान करने एवं मातृभाषा के संवर्धन की दिशा में काम करने की बात कही। आगे उन्होंने कहा कि भाषा गायब होती है तो उस देश की

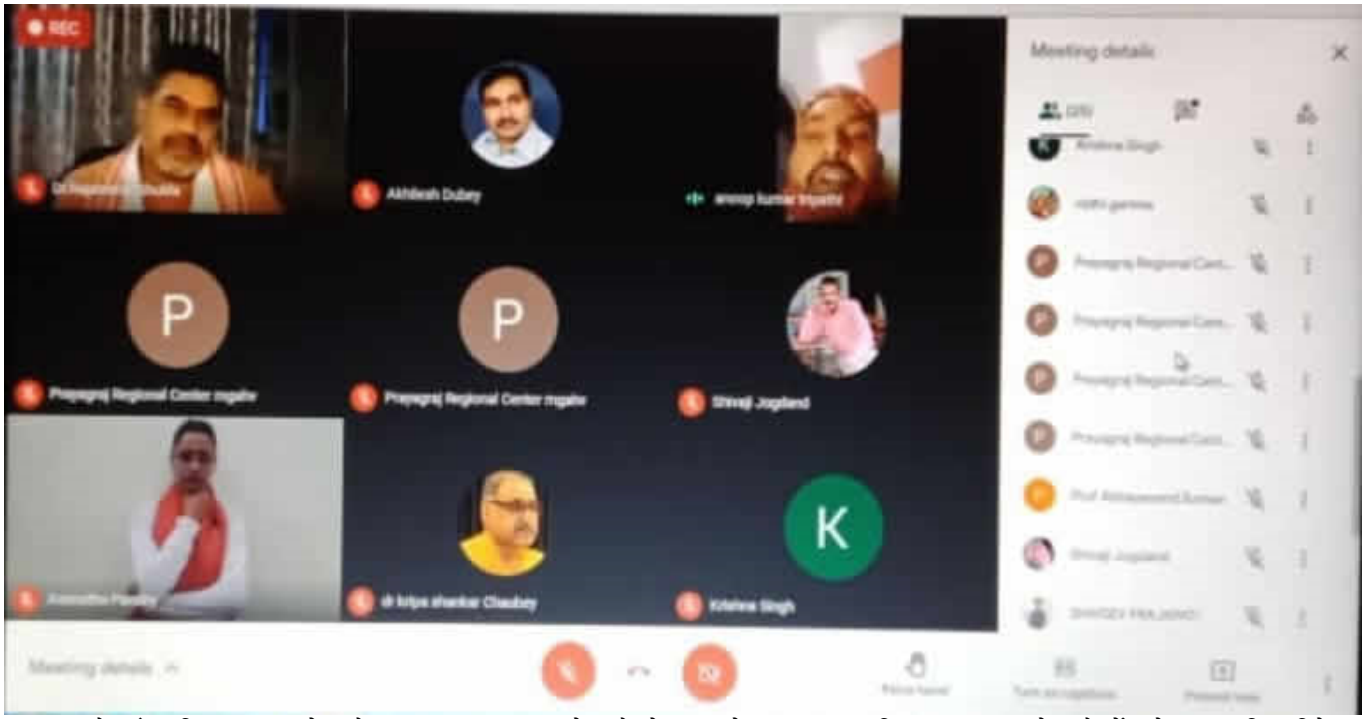

सभ्यता और संस्कृति भी गायब होती है। जब भाषा अपदस्थ होती है तो मनुष्य के कल्याण का विचार अपदस्थ होता है। केंद्र के अकादमिक निदेशक आचार्य अखिलेश कुमार दुबे ने मातृभाषा के महत्त्व पर चर्चा करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में केंद्र से डॉ विजय सिंह एवं

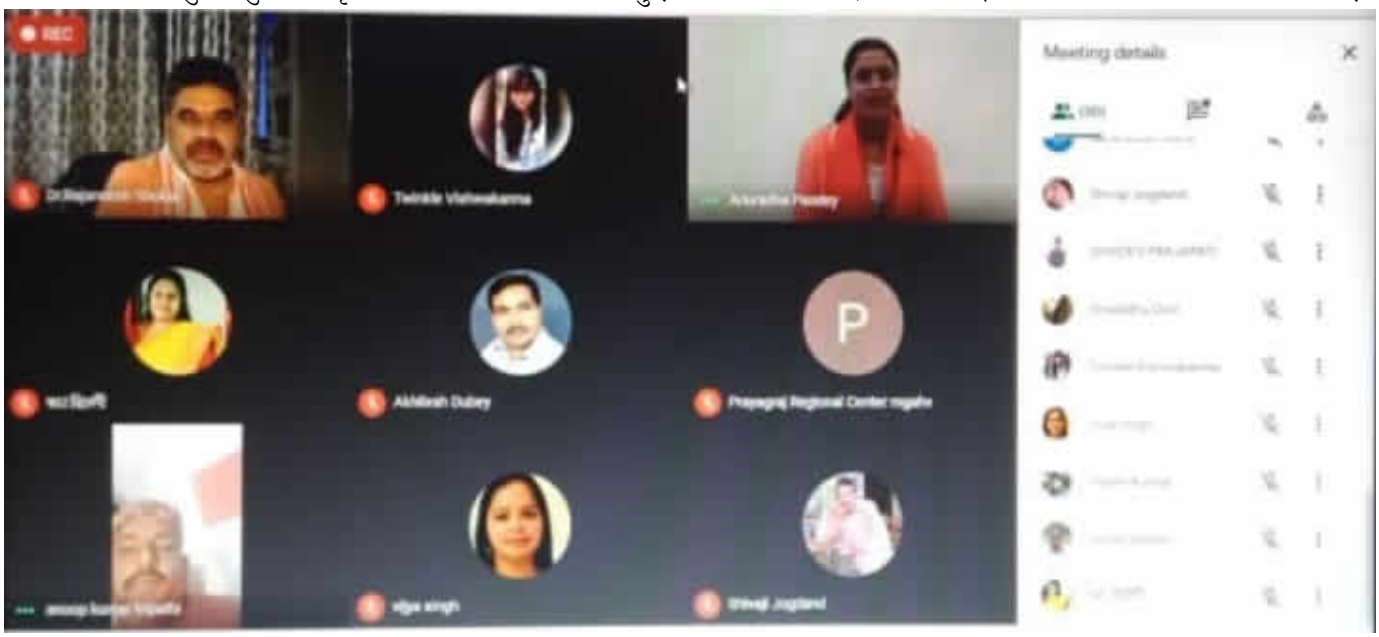

सहायक कुलसचिव श्री विनोद वैद्य, छात्र, शोधार्थी आदि भी जुड़े थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. अनूप कुमार ने किया। तकनीकी संचालन एवं सहयोग श्री जयेंद्र जायसवाल और श्री शिवाजी जोगदंड ने किया।

डॉ. अवंतिका शुक्ला
कार्यकारी अकादमिक निदेशक